

निबंध प्रदर्शन

आशा भक्तिकाथि

1.339

ASHA ARCHIVES

दुर्गा

धि

॥६॥ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीचण्वंतरे नमः ॥ वीजं शुतीनां सुद्व
नं मुनीनां जीवं जडानां महदादिकानां ॥ अजेयमस्त्रं न वपातकानां किं
चिन्महस्यामलमाश्रयामि ॥ लुब्धा कपोलमद्युवारिमद्युः वृतालीकुंज
स्थलीमद्युविभूषणलोहितंगी ॥ मातृक्यमौलरीवराजित्तस्यमौले
विद्युंससद्यनयतिविद्युपतिः सदावः ॥ २ ॥ योद्यांतसंततिविशालपत्ते
दिमद्भान्त्रिकासहस्रं शरं भुवनं निमज्जात ॥ दत्वा जगज्जहितः स्वक
रावलंबं वांछां सवेदिनकरः सफलीकरोतु ॥ ३ ॥ मिथ्यासनादिकृतं
षचयादिकोपनर्घं बुवर्द्धितं पदुवनं कृत्वा जीमे ॥ रोगाबुद्धौ न वज्रं न स्प
नेमिः सतेयः कोतप्रयच्छतु शुभौ निकास्तिराजः ॥ ४ ॥ केचित्संति निघंट
योतिलघवः केचिन्महांतपरे ॥ केचिर्हर्षमनासकाः कतिपये जावः स्त
मावोक्षिता ॥ नानाविधं नृणां विपुलं स्वप्नादिनां सतांति

त्य

रवायस्यादुःखं कफं हंति कटुत्वेन हरीतकी ॥ **हरीकी नाम गु**
णं ॥ द्रात्री फलामृत फलामलकं शी फलं शिवं ॥ तद द्रात्री फले वृषं विशेषा
दुक्त पित्त जितः ॥ अम्लत्वात् पचनं हंति शैतं पित्तं मद्धुर्जता ॥ कफ रूघं करवा
तित स्नातै कि मद्धि कं फलं ॥ **आबल नाम गुणं ॥** विजीतकः कर्ष फलो जूत वा
कलि दुमः वसं तो दो विं द्य जातः संवर्त स्तिल पुष्पाकः विजीतकः स्वा
कः करवायः कफ पित्त नुतः उष्णः वीर्यो हिमस्य शीतं दनः काशना
पूतो नेत्रहितः केशो मज्जातो मदकारकः ॥ **वहेडा नाम गुणं ॥** मे
का जो उप दू च जो ज्यो विजीतकः चत्वार्य मलका ने वात्रि फलिषां
॥ **पुमाणः ॥** त्र फला तत्र येन स्या वरा स्त्रेष्वा कफो त्तमा ॥ वि
कफ पित्त विनाशनी ॥ **त्रिफला नाम गुणं ॥** नू द्रुत्री च
की शिवा ॥ नू द्रु जी वात कृत्ति ता करवाय मच्च

हृद्यं वयसस्थपि न

सर्वप्रहाराणां वचनं वाच्यं सर्वज्ञं सर्व

यमद्युना ग्रंथो मयैव दत्तः ॥ ५ ॥ सर्वकोहेन संय
तकारणं ॥ आद्यैर्वैद्योपदे सस्तु कस्य न स्यात्सुखावहे
य ज्ञातव्यो द्रव्यनामगुणगुणः ॥ अतस्तथैव वदंतीति त
रुमः ॥ ९ ॥ शिवाहरीतकी पथ्या चेतकी विजया जयाः प्रमथ्या प्रम
थ्या कायस्था प्रणदा मृता ॥ जीवनीया हेमवती पूतना अमृता ज
वायस्था नंदनी ज्येष्ठा प्रेयसी रोहणी तथा ॥ हरीतकी पंचरसाञ्ज
मणतुं बं वरो लकटा ॥ रुद्रो ज्वादी पनी प्रेक्षा स्वादु पाकार सायणी ॥
सरा बुद्धिप्रदा मुष्ण च घृष्ण बं हरी लघु ॥ स्वासका सप्रमेहार्शः कु
शो कोदर रुमी न ॥ गुल्माघ्न न व्रण घृदि हिक्का कं डू हृदा मयान ॥
कामला शूलपा नाहं प्रीहानं च पक्वतीति ॥ मधुरा म्लतया वांतं क

ह ॥ भोः प्रावल्गनामगुण ॥ प्राचीनामलेकवा

वगुरुनाशन ॥ पाणी-प्रावल्गनामगुण ॥ वासावुध सि

गुण ॥ गुडचीकुडलीधन्नावयस्यामतश्चिन्नी ॥ वत्सवल्गरी ॥ धीनोडवा

॥ मताज्वरविनाशनी ॥ वसदिनीचंद्ररुहा ॥ जीवतीचक्रतद्वयणा ॥ गुडिचीकडकोत्तध्व

॥ कारसायणी ॥ संग्राहिणी कश्वापोऽप्रावल्ग्याविक्रांतिदियनी ॥ कामलाकुष्ठवातास्तज्वर

॥ नवमिन्नजयेत् ॥ धृतेनवातसंगुदावीवंहपित्तसिताध्यामधुनाकफच ॥ वातास्तुष्टंरुबुतैलसी

॥ सुव्यामवातसमयेगडुची ॥ इतिगिलेयनामगुण ॥ विल्वंसलारुसेलुषुमालुरसदीकस्तः ॥ लध

॥ लोगंडुगर्वः पांडिल्यः कंबल्यलधुस्नीगंधिहेतुवातकफोपहे ॥ वध्यंगुरुत्रिदोषास्योदुर्जर्यानुम

॥ वीटाहिकरविष्टमंमधुरंवरुमाघकृत ॥ गहणीकफवातामशुलाघ्नविल्वेषोशिका ॥ इति

॥ विल्वनामगुणसमापित ॥ अग्निमंथोजयेकेतुररणैवैजयंतिका ॥ अग्निमंथस्ययपुहृ

॥ वीर्योत्तः कफवातनृत् ॥ अरंजनामगुण ॥ पाटलाकामदुतीस्यकुमिकाकालवेति

॥ का ॥ अस्याल्पमोघामधोदूतीतामुपुष्पावुवासनी ॥ अन्याफलोनुहास्वेताक

॥ काकाष्टपाटला ॥ पाटलाचुचीशोथास्रस्वासचटुर्दिनाशिनी ॥ अनुत्ता

॥ रेखादुतत्युष्कफरक्तनुत् ॥ पितातासारदाहधुंफलोहिक्कास्रापित

॥ टकीमला ॥ विल्वंगाहिकुक्कावोस्तुडुदोपनपाचन

॥ विल्वं गाहिकुक्कावोस्तुडुदोपनपाचन

अनुगो

अ

प्र

प्रह्वाले

के

॥ पाटलाकाशपासनामगुण ॥ काश्मरीसर्वतोभद्राश्रीपर्णि कस्तुतीका कं
काश्मरीहीरीकाश्मर्जीभद्रकार्णिका ॥ काश्मरीज्वरशुलघ्नीवीर्योन्नामधुग
॥ तस्युष्णवातलगाहीपित्तसुकृपुष्पापहं ॥ फलरसायनंकेस्यवृंहणंशु
ल्लंगुरु ॥ १ ॥ नानापित्ततपत्रसाररक्तमूत्रविवेधनुत् ॥ कुह्मरिनामगुण ॥ स्पोना
कः पुष्पुसिन्धुस्यधुकनासः कटेनटः ॥ भूतवधुः स्वकटुगटुटुकः सोन
हीरलु ॥ मयूरजंघोभल्लुकः पियंजीवकटुभरः ॥ स्पोनाकंकोदीपनपाके
डुसुवरकोहिमः ॥ तिक्तोगाहीनिलश्लेष्मापित्तकासाघ्ननासन ॥ तस्य
॥ ल्लवकेगाहीपित्तसुकृपुदरापहं ॥ फलरसायनंसेषवृंहणंशुक्रवल्लगु
॥ रत्नुनामगुण ॥ जोष्ठुरः श्विकोटः कंटाफलस्यातुस्वादुकटुबंकः ॥
॥ रकोभक्षकटसिकुंटाव्यालदंष्ट्रकः ॥ शट्टशस्येलंजंगाहः खट्टगः ८५
॥ शीतलः स्वादुवल्लक्रतुवससौधनं ॥ प्रमेहका
॥ पोयरुनामगुण ॥ सालपर्णीधु
॥ रंजंकातिगुहदीर्घमूला

शुभसुखी॥ सा रतिपरिगुरु छर्दि खरका सातिसारनुत॥ शोषदोषत्र प
 यहरावहत्युज्ज्वलसायनी॥ **प्राप्तो नीनामगुण॥** प्रथीनी जोष्टपुष्पा
 द्वावनी कलसीगुहा॥ स्रगाँबं ताहितिले प्रथा कर्णि चपरिका॥ प्रष्टिप
 र्णिलद्युव्यामद्युरो ज्जाविना शयत॥ रताती सारत्रट दहदोषत्रयवमि
 खरान्॥ **पिठो नीनामगुण॥** ब्रह्ती स्थूलनेटाकी विशदाचमहोटिका॥
 वार्त्तीकी महती सिंही कंटकी राष्ट्रीका कुली॥ ब्रह्ती ग्राहिणी दुद्या
 पाचनी कफवातजित्॥ मुज्जाकुष्ट खरस्वा सकफका साग्निमद्य
 जित्॥ **वडीकटा हुनामगुण॥** कंटारीका कंटकी नी कंटकारी निदग्धि
 का॥ दुस्थर्श द्वावनी छुद्रस्या व्याघ्री दुःप्रदधिणी॥ सितछुद्राचं
 द्रहा सालक्ष्माण छेत्रदूतीका॥ कंटकारी सरातिका कटुका दीप
 नीलद्यु॥ नू नू छो ज्जापाचनीका सस्या सुखरकफानिलान्॥ न

॥ ४ ॥

~~चैत्रोत्तमसिद्धिमुद्राविनिहंतिपीतसंपासर्वपीडाक्रूरदुदामया~~
 न॥ तदस्योत्तमसिद्धिमुद्राविशेषादुर्जकारिणी॥ लघुकथं हस्येत
 कथं हूनामगुण॥ हस्वाष्टं पंचमूलस्यात्यंचमिजोक्षुरादमि॥ वल्यं
 पिता निलहरं नात्युष्टं स्वादु वं हणं॥ लघुपंचमूलनामगुण॥ पता
 न्यां पंचमूला न्यां दशमूलमुदायुतं॥ दोषत्रयस्वासकाससिरपीडा
 पतंत्रका न॥ तं द्रास्येदुत्तराना हरुचिपासर्वरूजो जयतु॥ दशमूलना
 मगुण॥ रिद्धिः सुषंयुं गलं द्दमी सिद्धि सर्व जना प्रिया॥ ऋषिस्तु रथं रस्या
 न्मंगलं आवणी वसुः॥ यो जंयुग्मा तुष्टिराशी वृद्धिरप्येतदा दूया॥ ऋ
 द्विर्वल्यात्रिदोषघ्नी शुक्रला मधुरा गुरु॥ वृद्धिगर्जप्रदा शीता वृष्या
 कासक्षया स्रनुत॥ रिद्धिर्वृद्धिनामगुण॥ कंकोली मधुरा वीरा कायस्या
 दीरशुक्लका॥ ध्वां द्दोली वायसोली स्यात्स्वादु मांसी पयस्वनी॥ दुति
 या दीरकांकोली सुरा द्वा दीरणी मता॥ कांकोली जुगलं शीतं शुक्रलं

॥ ४ ॥

म दुरंगुरु ॥ जयेत्संमीरदाहा अपित्त शोषत्रया ज्वरान् ॥ कांकोली
 क्षीर कांकोली नाम गुण ॥ मेदा ज्येष्ठा स्व संपाणी विद्या मेदो जवा दरा ॥
 महो मेदा वसुक्षि द्रात्रि दंतो देवता मणि ॥ मेदो युगं गुरु स्वादु वृ
 ष्ण स्तन्यं कफा वहं ॥ वंहं शीतलं वृष्य रक्तं क्षयं समी नुत ॥ मेदा
 महो मेदा नाम गुण ॥ जीवको म दुरः श्रेणी हृस्व ग कूर्च शीर्षकः
 कृष जो दीर द्वा द्रो वृषणी दुर्दरो वृषः ॥ जीव कर्ष च को वल्यो
 शी तो शुक्र कफ प्रदो ॥ हरतः पित्त दाहा अका सवात क्षया मयन ॥
 जीवको कृष म नाम गुण ॥ कृष वर्जो वृजि द्रव्यै रे ते शी तो ति शुक्र लः ॥
 वंहं शीत दाहा अशोष घृस्त न्य ग र्ज क्रतू ॥ कृष वर्ज नाम गुण ॥
 जीव ती जीव नी जीवा जीव नी या पय स्करी ॥ शाक श्रेष्ठा जीव जा द्र मं
 गत्या वीव वर्द्धनी ॥ जीव ती शीतला स्वादु श्लि ग्धा दोषत्रया पहा ॥

रसायनीवलकरचष्टुष्यावहलीलघु॥ जीवतीनामगुण॥ मद्युयष्टी
 त्ति ततकं यष्टी मद्युमद्युलिका॥ त्रयं कं मद्यु कं यष्टी मद्यु कं त्रलतामद्यु॥
 मद्युयष्टी गुरुशीता वल्व्यात्रदुष्टीदिपित्तजित्॥ मोलेठीनामगुण॥ माषपर्णी
 कसवताकाभोजी हयपुष्पिका॥ मासमाषीसिंहमु रवी स्वादमाषामहासदा॥ मुदु
 पर्णीतुद्रसिंहासूर्जपर्णी कुरंगिणी॥ वनजारंगिणीसिंविमिंदीमाजी रंगद्विका॥
 माषपर्णीहिमातिका रुह्याशुक्रवलासक्रतु॥ मधुराग्राहिणि सोमवातपित्तज्व
 राश्रनुत्॥ तद्वद्वेन्मुदुपर्णी त्रिदोषार्शोहरालघु॥ माषपर्णीमुदुपर्णीनाम
 गुण॥ जीवतीसूर्यपर्णीयुष्माकोल्यो जीवकर्षभौ॥ रक्तपित्तत्रिषाशोषज्वरवा
 हक्षयापह॥ जीवतीगणनामगुण॥ परंडोदाद्यदेउस्यतनुणेवर्द्धकोनकः॥
 चित्रपंचांगुल्योद्युपुष्पागुद्वर्द्धहसकः रक्तै रजोहासिकर्णो व्याधो व्याघुतलो नुवु
 उत्तानपत्ररुक्तातवैरितिवंचला॥ प्रउयुग्ममधुरः मुसुगुरुविनासयेत्॥
 मूलशोफकटिवसि शिरपीडादरज्वरान॥ बुध्मे स्वासकफानाहकासकुशाम
 मारुतान्॥ तत्फलमैमेदनस्वादुदायमुसुसमीरनुत्॥ अरउरुक्ताप्रउरउना

॥पु॥

॥पु॥

व्या
पूर्वी

मा

ए ध्र

संसारिवान्या

मगुण॥ सारिवासारदास्यो नागोपक न्याप्र लक्षणका॥ गोपाजनागोपवत्
कायसारिवा॥ सारिवाजुगलं स्वादुस्निग्धं शुक्रं करं गुरु॥ दोषत्रयासुपदे रजरात
सारनासने॥ कायसारिवा कस्तसारिवा नामगुण॥ यथासोम रुद्र बोने तादीर्घमु
लो जवासकः॥ वस्तपत्रो समुद्रो तो दूर मूलो तिके टकः॥ द्वन्वया सस्ता प्रमूली दुस्य
शो सदुरात्तभा॥ जासकः कछुराता प्रमूली द्वन्व जवासकः॥ जैर्यसिकः स्वादे
रसास्ति कोहि मपित हरो लघु॥ हतिरक्तं कफं मातिसद्वन्व जवासकः जवासा
द्ववासानामगुण॥ मुहिनिष्ठः पारिव्रजो ब्राह्मणी स्यात्तपोद्धनी॥ आश्रणी
श्री मता मुंडीति का आविर्ण सौर्वका॥ मुंडीति का कपु पाके वी र्यो मचुरालघु॥
मे द्या गं द्या पचि क्क क्क मि ज्ञो न्य नि पां इति त॥ मुंडी पाती नामगुण॥ महा मु
डी लो जनी या छिन्ना जंघि नि का स्मृ ता॥ नू त वृ क्क कु लु ह लो लू व शालू क
दं व कः॥ क द वं पु ष्पी मुंडी व द्गौ र्मु मि क दं व कः॥ वडी मुंडी पाती नाम॥ अ
पामार्ज स्तु किं री कि ए ही रं व र मं ज री॥ अ द्धः श ल्य शै ष रि को प्र ल्प क्क पु ष्पी
मयुर कः॥ अ पामार्जः शरः स्ती द्धो दी प नो क फ वा त नु त॥ नि हं ति द द्गु सि
छा र्शीः कं डु श लो द र प ची॥ उ गु वा ना मगुण॥ अ न्यो र क्तो व त फ फे लो व सि रः

श्री

स्व

मघट

॥६॥

यु

कपिपिपली॥ अपा मा जी रु शो वा त वि षं जी क फ ना श नः॥ न नः पूर्व गु
हो रु षं त क ल र क पि त नु तः॥ रक्त पा मा जीः॥ कं पि लो रे च नो र क चू र्ण को
व रा शो द नः॥ लो हि वो र क स म नो रे च रं ज न को म तः॥ कं पि लः क फ पि ता
स रू मि गु लो द र व रा नः हं ति चै रे क हु श्रु त त्वा कं ग्रा हि शं त लः॥ क वे लाः॥
दं ती गु ण प्र या ना श दं ती शी घ्रा नु कू ल कः॥ उ प चित्र नि कं जा स्य दि सि ल्यो
डुं व र ष्ट दः॥ आ षु प र्णी व षै रं डा द्र वं ती सं व री म ताः॥ मू लं का दू सु त प्रे र्णी ष दा द
प्र त्य कू शे र्णी च पं जि काः॥ दं ती द्र वं सं र पा कः र स यो क दु दी प नीः ती क्ष णे
अ हं ति पि ता स्र क फ सो को द र कू मी न॥ दं ती नि दं ती ने दः॥ ज य पा लो दं ती
वी जं र व्पा तं त ति ती री कं फ लं॥ ज य पा लो गुरु श्रि ष्मि ग्यो रे चि पि त क फा
प हः॥ ज माल जो द॥ त व लुं जो रु ण त्प स्रा हं डी कू ट र वा हि नीः॥ सर्व नु
नू व स्र वृ ता वृ ता सर ला शि वा त्र वृ पि ता सरा रु षा स्वा दु रु श्रा स
मी व हू तः॥ क दु पा का त्व र ष्मि पि त शो को द रा प हाः॥ स्वे त नि शो तः॥

॥६॥

त्रवल्क काला कलमे श्री कालपरी दिचंद्रिकाः ॥ सुषेण स्यान्मालविका म
 सुराविदला मताः ॥ प्रवल्काला हीत गुण सा स्या तीव्र विरेचनीः ॥ मूर्छा दाह म
 दन्त्राति कंठोत्कर्षण कारिणीः ॥ **श्याप्रतिमोतः ॥** द्वाद्वारुण्ये द्वाद्वारुण्ये
 द्वाद्वारुणीः ॥ ऐंद्रवीरुद्वय फला विशाले द्वि विषादनीः ॥ अन्ये द्वारुणी
 चित्रा फल चित्र चिह्न का फलाः ॥ आहार रंघना ठा देती गि पुसी ग ज चिर्ज हीः स्वे
 त पुष्पा मृगा छी च तथा ज छ सुश्रमताः मरुद्वारुण्ये कति कुं जा चित्र देवी चकी
 र्तिताः ॥ ऐंद्रवीरुद्वयंति कं कटु पाके सरं लघुः ॥ वीजो मूल का मूल पित्त कफ
 प्रहोदरापहं ॥ **ऐंद्रवारुणीद्वय फल फेदुवा ॥** आरज्वद्वोरा ज वरुण्ये सम्य कः क
 त मालकः व्याद्धितं कर्णिकारः प्रग्रहः ज्ये तु रं गुलः ॥ आरो मोग्य सिं वी स्वर्णी
 दुर्कणि दीर्घ फलो मतः ॥ कुंडली हे म पुष्पा च कलि र्वतो न पदु मः ॥ स्वर्ण से फलि
 का ग्री च कुशू सूदन ना मतः ॥ स्वर्ण से लो पि सै प्री ता स्वर्ण दु म ज की र्ति तः ॥ आ
 रज्वद्वो गुरु स्वाद शीत लो मृद रेचनं ॥ ज्वर हृद्रोग पिता स्रवा तो दा वर्त शूल जितः ॥

धा

धो ५

सुवर्ण दु म की र्ति तः २

धं८

पधा

७॥

तत्पुष्पं वातलगा हातता पतककापहः तन्मज्जा मद्दुरः पाके श्लेष्मि गृध्र पित्त समीर शरीर
करवाला ॥ नीली नी नीलिका ग्रामा शी फला मारवाहिनीः रंजनी नी कालिका मेल
तूनी तूष्ण विशोद्धिनी ॥ नीलि निरेचनी तित्कारे सामो हन्त्र मापहाः ॥ मुष्मा हंत्युदर
प्रीह वातरक्त कफ निलान् ॥ **नीलिनी** ॥ कटु की रोहिणी तित्का चक्रां जी कटु रोहिणी
मत्स्या पित्ता कांडु चूहा कृष्ण मे दौर्द्धि जोगिका अप्र शोक रोहिणी मध्यास कु मन्ना सकुला
दनी ॥ कटु की कटु काया के तित्का चूदा सराल घु ॥ हि मा हंति कृमि स्वा सदा ह पित्त कफ
ज्वरान् ॥ **अथ कोल नाम** ॥ मंकोल कस्ता म्र फलो पीत सारो निको चकः गुपू स्नेहो विरेच
स्या दू सित दीर्घ कीलकः ॥ मंकोल कः कटु स्निग्धो तीक्ष्णो हृस्व स्तवरो लघु रेचनः कृ
मि शूलाम शोष श्लेष्म विषापहः ॥ तत्फलं शीतलं स्वादु श्लेष्म लेवं हं मुरु ॥ वक्ष्ये वि
रेचनं वात पित्त दाह क्षया स्त्राजित् ॥ **अथ सीहंड** ॥ सौहंडो वज्रतुंड स्तु गंडी रो वज्रदंड
कः ॥ स्नुही सतंतु दुग्धा सिपत्रो वज्री महातुरः ॥ सौहंडो रेचन स्तीक्ष्ण दीपनः कटु
को गुरुः ॥ शूल माषी लिका घ्नान गुल्म शी फोद श निलान् ॥ हंति दूषी विष प्रीह
कुष्ठो न्मा दा श्र पांडुतां ॥ **अथ निंब नाम** ॥ निंबो नियम नो नेतारि वृ स्यात्पारिजद्रकाः

हो

मध्यकुर
की मा मग

॥७॥

त्यं ५

कुषहादेवदत्तश्च सविसंनिधिरुयंकः ५९

॥ सुतिक्तः सर्वतोभद्रः पिबुमदः प्रमदः कः निवसुशीतलः ग्राही कटुपाकोऽग्निवातघ्नः ॥ २ ॥ एषः

तकफरुद्दिनु य इस्लाम मे हनुत ॥ अथ वक्रायि एनाम ॥ महानिवा निवरकः कर्पु क विषम

येका। रम्य को गिरि को देको ही रम्य के ये मुखिका ॥ मं हा नि बोहि मो नुद सित्त गा ही कं पा एकः ॥

फपित्तकृमिक्षुर्दिक्कुण्डलासनक्तजित्॥ अथचिरायता॥ किरततित्तः कैरातोमैभुनिवा रामसे नव

किरातको न्योनैषत्तानां शीतको ज्वरं तक् ॥ कां उभितो द्वैतित्तस्या विद्रारि संलिपात हा ॥ पि ॥ लं व

तलो रु उद्यो शितलः सिके कोलघुः ॥ संनिपातत्वरस्वासकफपित्तसुदाहृतन ॥ ग्रथक उ ॥ रु रजि

मल्लिकापुष्पोक्तं जगिरिमल्लिका ॥ ८ ॥ सकः कदको उद्वादीपकस्तवरा इमः ॥ अशीति

रपित्तस्रवपुत्रजामकुशुतुत् ॥ तद्युद्धातलशीतंतिक्पित्तिसारनुत् ॥ अथ इह ॥

यवस्य फलो कात्तिगः कोटजामतः ॥ ऐह यवमिदो वधो सगाधी शीतलः केरः ॥ ३ ॥ यवस्य फलो कात्तिगः कोटजामतः ॥ ऐह यवमिदो वधो सगाधी शीतलः केरः ॥ ३ ॥

रत्नार्शकमिवीसर्पकुयनुत्॥अथमैणदल॥महन्मर्दनीहीमरुपि

हाटश्चतगरः शल्यकोविदं प्रपश्यतः ॥ मृतं चोत्तमं चित्ते नैव कल्पेत् ॥

कफाबाहशोफ पाल्मवाप्यः॥ कफरे न रे॥ दे न रे न रे

वफाना हशाफि गुल्मवृणापर ॥ **अथ ककुब्जा** ककुब्जा ककुब्जा रेचन रगराय ॥ रोम

न पुल्ह का हो सव राग के जुवा हूँ के ॥ न कुष्ट रचन रत्न के दुष्म वारि कार के ॥ न मशफादरा

मानगन्तव्यं च ॥ देमा रुवका इति ॥ देमा रुवका इति ॥

ॐ नमः शिवायः श्रीगणेशाय नमः

...हा चर्म के सा...
 शीर्षक फाना हा...
 ...पत्रकः॥ मल दण्ड गम्योनि स्यात् शाली...
 पनाशिनी॥ अस्मत्सु वरोगा ही शी लो ल क फ वा त जित्॥ **अथ के च ना रू॥** का च नार का
 चन केः पाकारी रक्त पुष्पकः॥ को वि दा रो स्प मे दः स्प र कु दारः कुं ड ली क ली॥ आ स्फो तो द्या ल
 कः स्वल्पः के सरि अ भ रो हितः का च नारो हि म ग्रा ही रु चि रः अ न्य पि त जित्॥ क नि बु य गु
 द भुं रा ग उ माला वृ ण प ह॥ को वि दा रो पि त द्वा स्या तु ध्यं शी त त यो र्ने धु॥ उ दं स ग्रा ही पि ता सु प्र द न
 द त को श नु तू॥ **अथ सि मालु॥** निर् गु डी अ च त कु सु मा सि न्दु कः सं द्रु वा र कः॥ भू त के शो ऽप
 रा नि त्ता सि न्दु को नी ल पुष्प कः॥ सि भा लि का शा त भी रू व ण को नी भिं ज री॥ निर् गु डी अ द्या वि
 ति का क षा या क दु का ल धु॥ के षा ने त्रि हि ता हे ति शु ल शो का स मा रु ता न॥ क नि बु य रु चि
 अ न्य वृ ण नी ला पि त द्वि च॥ **अथ मे ष अ जी॥** मे ष अ जी मे ष व ह्नी स र्प द स्या ज अ जी का॥ अ
 न्या च द क्षि ण वर् ति वृ षि का ली वि षा णि कौ का॥ मे ष अ जी र सो ति क्ता वा त ला का श ना शि नी
 नू द पा का क दु पि त्र वृ ण अ न्य आ हि शु ल नु तू॥ **अथ पु न र् न वा॥** पु न र् न वा अ च त मू ला पृ
 र्खी का दी र्घ प त्रि का॥ वि शे षा दी र्घ वर् षा नू पु न र् न ड लं छ दः॥ पु न र् न वा स रा त
 क्ता र क्त पु ष्पा क वी ल्लि का॥ कू र का ह्यु द्र वर् षा भूः वर् ष के तुः सि चा टि का॥ शो फा नि ल वृ ण घा हि

॥
 ॥
 ॥

॥
 ॥
 ॥

अथ रुच्य रसायना ॥ पुनर्नवापरारक्तारक्तपुष्पकविल्लेकः ॥
द्रवर्षाभुः वर्षकेतुः सिवाटिका ॥ पुनर्नवारुणतिक्ताकटुपाकाहिमाद्यैले ॥ वातलो
हिणी श्लेष्मपित्तरक्तविनाशिनी ॥ **अथ राश्या** ॥ राश्या रस्यायुक्तरसारलेनागंधना
कुली ॥ सुगंधमूलतिरसाश्लसी सुवहारसा ॥ राश्या पाचनीतिक्तागुनूश्लेष्मवा
तजित् ॥ कफश्लेष्मसमीराशीवातश्लेदरापहः ॥ **अथ श्लेष्मजंघा** ॥ श्लेष्मजंघाऽतुरं
गाह्यजोकर्णश्लेष्मवरोहकः ॥ वराहकर्णी वदरावल्यावाजीकरावृषा ॥ श्लेष्मजंघा
निलश्लेष्मशोफश्लेष्मत्रययापहा ॥ वल्यासीयणीतिक्ताकषायोत्मातिशुक्ला ॥ **अथ**
प्रसारिणी ॥ प्रसारिणी राजवलाद्यारूपणी शतानिका ॥ सरिणी सारिणी जट्टापणी सु
प्रसारिणी ॥ प्रसारिणी गुरुर्दृष्टसंघातबलकृत्सरा ॥ वीर्यश्लेष्मवातनुतिक्तावातर
क्तकफापहा ॥ **अथ शतावरी** ॥ शतावरी जीरुपत्रीद्विपिकाद्यरकंसमी ॥ नारायणी श
तपदी शीतपावहूपत्रिका ॥ शतावरी गुनूशीतास्वादुस्निग्धारसायनी ॥ शुक्लसूक्ष्म
करावल्यावातपित्ताश्लेष्मजित् ॥ **अथ महाशतावरी** ॥ महाशतावरी मेघाह
द्यावल्या रसायनी ॥ शतावरी कटुन्यापी वरीदीवरी वरी ॥ अजीरुर्वहुपत्रा

तेजस्विनी फेफ स्वासकाशास्यामयवातजित्पंचान्युष्माकटुस्तिक्तमृचिबहिप्रदायि

चमहापुरुषदंतिका॥ सहस्रवीर्यकेशीस्यातुंगिनीसूक्ष्मपत्रिका॥ महाशतावरीमे
ष्पाट्टपावष्पारसायणी॥ शतवीर्यनिहंत्यश्रीग्राहिणीनयनामजान्॥ तदंकुरस्त्रि
दोषघ्नः लघुरशीक्षयापहा॥ **अथविरहटी॥** वलावाद्यालकः शीतापाकीवाद्योदना
हृजा॥ जद्रोदनीसमंगास्यासमंस्पाखिरपष्टिका॥ **अथसहदेवी॥** महाबलावीरपु
ष्पीसहदेवामहाबला॥ वाद्यायनीदेवसहिवाद्यास्यात्पीतपुष्पिका॥ **प्रगही॥** वलि
कृतिवलाजारवाजीस्यादक्षिगंधिका॥ **अथगजेति॥** गंजेरुकाणागवलाविश्वेदे
वागवेद्युका॥ वलाचतुष्टयंशीतंमधुरंवलकांतिकृत॥ स्थिग्याग्राहिसमीरास्रपि
तार्शक्षतनाशनं॥ आसांतुहदलाकृष्टुहंतिवातानुलोमतं॥ गुर्वीनगदाव
ष्पाविशेषादशीपित्तजीत॥ तस्याः फलेहिमंस्वाद्युस्तंजनंगुरुलेपनं॥ विविधाद्या
नजननंरक्तपित्तनिवर्हणं॥ **अथतेजवती॥** तेजस्वनीतेजवतीतेजोह्वास्यद्युबल्लला
महोजसीपारिजाताशीतातिकासुतेजसी॥ **मालकागुणी॥** ज्योतिष्मतीबहूनुच्यकं
गुनीकटुजीतया॥ ज्योतिष्मतीकटुस्तिक्तासराकफसमीरजित्॥ अतुलावामिनी
तीक्ष्णवह्निबुद्धस्मृतिप्रदा॥ **अथदेवदारु॥** देवदारुसुराहस्याद्बुद्धदारुसु

पुरदुमः

क. ६

चा

नदुकां स्नेहवदं कलिं गंशुक्रदारुच ॥ देवदारु कटु स्निग्धं तिक्तं लिघुना
शयेत् ॥ आध्यानं नवरशो थार्शहिका कंठकफानिलात् ॥ **अथ चीटु** ॥ शूलो मंद
न श्री छोन मे रुदी पव द्रवः ॥ पीतदारुः पीतवद्यो महादीर्घ रच दुमः ॥ शरलः
कटुकः पाके रसयोर्मधुरो लघुः ॥ उष्णः स्निग्धः समीराद्यौ कंठकर्णमजापह ॥ **पुष्करमूल** ॥ पौष्कं हृदयं पद्मपत्रं पौष्करं पुष्करहृदयं ॥ काश्मीरं पुष्करं जटामूलं
वीरु सुगंधिकं ॥ पौरं कंठकटु स्निग्धं मुस्तुवातकफह्वरान् ॥ हंति शोफा रुचिश्चास
नू विशेषात्पार्श्वमूलजित् ॥ **अथ कूट** ॥ कुशं रोणं हृत्कुटं पौकौ वेरं पारिज
तकं ॥ पारहासं परिजातं इत्यलं हरि नद्रकं ॥ कुशं मूलं कटु स्वादु तिक्तं शुक्र
प्रदं लघु ॥ हंति वातास्रवीसर्पकासकुष्ठमरुत्कफान् ॥ **काकजं अंगी** ॥ अंगीवृ
लीरं अंगम्याद्वै काकं कटु अंगीका ॥ कर्कटाक्षो महाद्योषो अंगीना मूला नता गपीपि ॥ अंग
कषायातिक्तोष्णो हतिमिध्मावी मज्ज्वरान् ॥ **अथ रोहिष** ॥ रोहिजं कत्रं भूतिकं सरस्मं त्र
णं स्यामकं मुहुतं पौरं रंघा मकं देवगंधकं ॥ रोहिषं कटुकं पाके तिक्तोष्णं तु वरं जयेत् ॥ कं
ठु हृद्रोगपित्तस्रमूलकासकफह्वरान् ॥ **अथ कायफल** ॥ कटुफले कटुदं कुत्री

शिलाभेदोदयज्वेदोनागामनेमभेदकः ५ पाषाण

निघंट

कृष्ण

॥१०॥

श्रीप्रणीसोमपादपः॥ सोमवटकोमहाकुंजाद्रामदुवतीशीवा॥ कटुफलंतुव
रंतिक्तांकटुवातकफज्वरान्॥ हंतिस्वासपुमेहार्शकाशकं मयारुची॥ **अथजा**
डंजी॥ ज्ञाजी नृगुमयापद्युकासाध्वीगर्भपर्विणी॥ परशकं सुक्रमाताज्ञेजीव्राह्म
ण्याष्टिका॥ भार्गीनूनाकटुसित्ताउदोष्मापाचनीजयेत्॥ शोथकाशकफश्वासपीनसज्वर
मारुतान्॥ **अथपाषाणभेदः॥** पाषाणभेदपाषाणोऽस्मिन्भेदोऽस्मिन्भेदकः॥ शिफाभेदस्तुवरशात
लोवत्तिशोधनः॥ शरीरं सित्तप्रमेहाश्रककास्मरिनुयोजयेत्॥ **अथमोयेनागरमोये॥** मु
स्तवारिचरेमुस्तमेद्यारव्यः कुन्नुविंकैदे॥ वराहोदघनो नद्रमुस्तं राजकसेरु
कः॥ पिडमुष्टावध्वंसीनागरोन्यः प्रकीर्तितः॥ मुस्तंकटुहिमं ग्राहितिकं पाच
नदीपनं॥ कषायं कृमिपित्तास्त्रकफरश्मज्वरापदं॥ **अथद्या॥** द्यातुकीकुं
जरीसिंचुपुष्पप्रमदनीमता॥ पार्वतीजाताम्रपुष्पीसुजह्यामद्युवासिनी
द्यातुकीकटुकाशीतामदकृत्ववरालवु॥ रश्मातीसारपित्तास्त्रविषकृमिवि
सर्पजित्॥ **अथमा॥** माचिकावलिकावयुसचीदंतसंठविका॥ संवयुकीशु
चिमुखीकैषाजाशकटंमुषं॥ माचिकाम्लारसेपाके कषाजाशीतलालवुः॥

ॐ नाम संवर कंदरः

तारपितास्रकककंठा मलापहा ॥ **अथ विदारी कंद** ॥ विदारिका व
वल्ली वृषा कंद विदारिका ॥ **अथ गारिका कंद** वल्ली स्वादु कंद पलासिकः ॥
मन्या शुक्ला क्षीर शुक्ला क्षीर वल्ली पलासवती ॥ दृक् वल्ली मदा स्वेता
क्षीर गंध सुगंधिका ॥ **विदारी मधुरा स्निग्धा वं हृणी स्तन्य शुक्रला ॥ गु**
रुपिता स्त्रु पवनं दाहं हंति रसा जनी ॥ **अथ वाराही कंद** ॥ वाराही मध
वी गृष्टि सौर्क वन मालिका ॥ तस्याः व कटि गोदुना सा सव कंद विकः ॥
वाराही मधुरा कंदे कटु तिक्त ति शुक्रला ॥ **वल्यापित्त करा वात कफ**
मेद कृमी नृयेत ॥ **अथ पायनाम** ॥ पाछा वष्टा वहति का प्राचीना वष्टि
की रसा ॥ वरंति का पाय चेली अतु श्री वृद्ध कर्णिका ॥ पाछे शुक्रा कटु का
ती दण वात श्लेष्मोद रालघुः ॥ हंति शूलं वर हृदि कुष्ठा ती सार हृदयः ॥
दाह कंदु विषश्चास कृमि गुल्मोदर व्रण नू ॥ हस्ति कर्ण गज कर्ण
र्ण पलासकः ॥ रस्ति क कर्ण पलासोधि करिका एष्ट मया ॥

नेष्ट

परं वषो मेघा युवलवर्द्धनः॥ **अथ मूर्वी**॥ मूर्वी देवी प्रचुरसा
द्युप्रवास्ति गद्यपार्णी पथकूपार्णी मोरटा पीलुपर्णिका॥ मूर्वी सरागुरु
पितासमेहनत॥ त्रिदोषहरणा हृद्योगकंदुकुष्टहरापहा॥ **अथ मंजीठि**॥ मं
विजजारत्तारत्तांगी कालमेषिका॥ रक्तज्योताम्रवल्ली समंगावस्त्रमूषणा॥
मंजुलाविकसा मंजीष्ठा कौबुरनाशिनी॥ मंजिष्ठा मद्युरातिता कषाहा स्वर
वर्णकृत्॥ गुरु रुष्णा विषश्लेष्म शोथयो न्यादि मूलमुत्॥ रक्तातीसार कक्षस
विसर्पव्रणमेहजित्॥ तच्छाकंदीपनं स्वादुस्निग्धपित्तानिलापहं॥ **हलदनाम**॥
हरिद्राकटुरंजिनी गौरंजनी वहुवर्णनी॥ पिंडीपीतावर्णवती निशावर्णविलासिनी॥
हरिद्राकटुकातिक्ता नृदोला श्लेष्मपित्तनुत्॥ वर्णत्वज्ज्योषमेहार्शशोफपांडुव्रण
पहा॥ **अथ पवाडु**॥ प्रपुंन्नाटस्त्रेडगतोचक्रमर्दप्रपुंन्नाटः॥ दद्रूद्यौमर्दकोमे
षकुसुमः कुष्ठनिहंतनः॥ प्रपुंन्नाटोलघुस्वादुनृक्षपित्तानिलापहः॥ हृद्यो
कास्वादुकुष्ठदद्रूक्षमीनजित्॥ हृत्पुंन्नाटतल्पलंकुष्टकंदूदद्रूविषानि
हरत्तापहतस्याशकंकफकरंलघु॥ **अथ दारुहरिद्रा**॥ दार्वी दारुह

॥११॥

र

॥११॥

सर्ग स्मरोग

दिद्रान्पापीतदारुपंचपचा॥ कटंकटेरीपीतद्रुस्वर्णिकंटीकटोवा
षातुनेत्रेकर्षजित॥ **अथ वाकुची**॥ वाकुचीचंद्रिका सोमवल्ली पूतफला वरा॥
सोमरांजी कृष्णफला वल्लुजा कालभेषिका॥ वाकुचीमधुरातिक्ता कटुपाका
रसायनी॥ विष्टंजिनी हिमार्च्य सराहृदा स्त्रपित्तनुत॥ नृदा हंतिकफज्या
सकुष्ठमेहवैज्वरकमीन॥ तत्फलं पित्तकृतस्वेतकुष्ठवातकफापहं॥ **अथ ज**
गरा॥ जंगरांजो जेकरतो मारक वः के शरंजनः॥ अंगारको जंगुराजो जार्जवः
शूकवल्लभः॥ जंगुराजो कटुस्तिक्तो नृदो अजो कफवातनुत॥ दंत्योरसा
जनें रुच्यं कुष्ठनेत्रशिरोर्तिजित॥ **पित्तपापडा**॥ पर्वटः कविचोरेणः पित्तहाश्ज
वकंटेकः॥ वरतिक्तः पर्वटकः शमूलः दशांघ्रिसर्वकर्मकंटेकः॥ पर्वटो हंति पित्ताश्रम
मत्तज्जा कफज्वरान्॥ संग्राही शीतला तिक्तो दाहनुद्विग्नो लघु॥ **अथ शण्णपुष्पी**॥
शण्णपुष्पी माल्यपुष्पी चावनी सहिचंद्रिका॥ बृहत्पुष्पा स्वल्पघंटा घंटा श
द्वोरपुष्पिका॥ शण्णपुष्पी कटुपित्ताश्लेष्मा जिह्वार्द्रिका रीणि॥ **अहमाणीज**

चंद्रलेखा त्वया सोमा कुवृद्धी सा सितोपराइ

वर्णि

त ३

निघंट

फल

द

यमाणा सुहृत्ताणां यंतीति रिजानुता ॥ वलनद्राक्तं तज्जाणां वार्षिकं त्रयमा
एकः ॥ त्रयमाणा सरापित्तानुवर्षास्रशूलजित् ॥ **महाजालि** ॥ महाजालिनि
काचर्षा रजस्यात्पीषकीलका ॥ आवर्तकी विदुकिनी वज्रोडी रक्तपुष्पिका ॥ म
हाजालिका तित्तारे च नीकफपित्तनुत् ॥ हंति दाहो दशानाहो शोफकुष्ठक्षमि
ज्वरान् ॥ **अथ पतीसा** ॥ अतिविषाश्रुक्कंदविषाप्रतिविषापरा ॥ श्मामकंद्यास
ताः पर्णी जंगरोपि चिषाणिका ॥ विषेष्मा पाचिनी तित्ताश्लेष्मा पित्ताति सारजित्
अथ काकमाची ॥ काकमषी ध्वंक्षमाचिका मची जंघने फला ॥ रसातल नव
रा सर्वतित्ता स्यात्क्किनी कटुः ॥ काकमाची त्रिदोषघ्नी जिघ्राज्घ्रा आषरश्रुक्
या ॥ हृद्यारसायनी शोफाकुष्ठा शीज्वरमेहजित् ॥ **अथ काकजंघा** ॥ काकजं
घानदीकांता काकतित्ता सले मता ॥ परवात करीका कर्मदद्या कर्मणी त
था ॥ काकजंघा हंति रक्तपित्तश्लेष्मकफज्वरान् ॥ **लोचुद्वयं** ॥ लोचुः मि
कीरीटः कानीनः सिल्लकः सततोद्भवः ॥ अन्याधूतुकुसावरकः ॥ **लोचुः** ॥ लोचुः ॥

॥१३॥

॥१३॥

रोधो विरेचनः शीतश्चक्षुषः कफवित्तनुत् ॥ कषायोरक्तशोफाश्रुत्वरातीसार
नाशनः ॥ तत्पुष्पं मधुरं ग्राही मति कंठेष्वापि तजित् ॥ **अथ विद्यारा** ॥ बद्धदारु
महास्वामा जोगलो ज्ञा एवा लुक् ॥ अंजकोट रक्क पुष्पी स्यादावे जी ह्य गला अ
पि ॥ बद्धदारु कषायो ह्यो सरी जक्तोरसायनं ॥ वरव्यो वात मता स्र शोफ मे ह
विंदालि पतिकफाननुचेत् ॥ **अथ देवदालि** ॥ देवदाली वंतको शो देवता डागरी
गरी ॥ जो मूतो वारिका वेणी द्विः तत न्य पुत्रिषा पहा ॥ देवदाली रसे तिक्ता कफा शी
सोफ पांडता ॥ नाशयेद्वा दनी तीक्ष्ण जल हि घ्ना क्ति म्बु रान् ॥ **अथ हंसपादी** ॥
हंसपादी हंसपादी रक्तपादी त्रयादिका ॥ प्रल्हादिनी कीट मादी कीट मा नी म
धु अवा ॥ हंसपादी गुरु शीता हंति रक्त कफ व्रणान् ॥ वि सर्वदा हाती सौर नूता लू
ताश्च रोपणी ॥ **अथ सोमवल्ली** ॥ सोमवल्ली जज्ञनेता सोम द्नी रादिना प्रिया ॥
सोमवल्ली त्रिदोष द्यूक टुति कार सायनी ॥ **अथ नाकुली** ॥ नाकुली सुवहा पुं सर्प

नेष्ट

प्रागंघ्रिनीगंधनाकुली॥ नाकुलोष्टाप्रतासर्पनेत्रवारिविपत्रिका॥ ना
कुलीलीतुवशतिक्ताकटुकोष्ठाविनाशयेत्॥ वधलूतावश्रकाकै
सर्पानांचक्रमिव्रणान्॥ **अथ वडवती**॥ वडपत्रीमोहनीस्यादिपनी
रेचनीप्रता॥ वडपत्रीयोनिगताकषाखोष्ठाविनाशयेत्॥ तत्फलं संम
नंशीतं वातलं कफपित्तजित्॥ **अथ लज्जालू**॥ लज्जालुमोहनीस्यकाषा
दिशगंधकारिणी॥ नमस्कारं समीपत्रांसं गारुतेपादिका॥ लज्जालुः शी
तलातिक्ताकषाजाश्लेषापित्तजित्॥ रक्तपित्तप्रतीसारं योनिरोगान्नविना
शयेत्॥ **अथ मूशाली**॥ मूशालीकैलुनीतालुपत्रीकांचनपुष्पका॥ महा
वधवधकंदर्पज्जुरीतालमूलिका॥ मूशालीमधुरावष्ठावीर्योष्ठावृ
हणीगुरुः तिक्ता रसाजनीहंतिगुदजान्पलितंतथा॥ **अथ कौष्ट**॥ कपिकष्ठ
स्वजंगुष्ठाकटुलीदुरविग्रहा॥ चंडासगुप्तालागुलीमर्कटीस्वातंहर्षिणी॥

॥१३॥

॥१३॥

कपिकमुपरावष्ममद्युरावहणी गुरुः॥ तद्दीजंवातशमनेवाजीकरणमुत्त
मे॥ **अथ जीजापोता॥** पुत्रजीवोगर्जकरेओ जपुष्पोद्घसाघनः॥ पुत्रंजीवोगुरु
वष्मो गंद श्लेषावातवृत्त॥ **अथ वंद्या कर्कोटिका** वंद्या कर्कोटकी देवी कुमा
री विषनाशिनी॥ मनोज्ञा नागदमनी वंद्या जो जेश्वरी तथा॥ वंद्या कर्कोटिका
लघ्वी कफनुद्वृण शोचिनी॥ सर्पदाहहराती दूरी वि सर्प विष हरिणी॥ **अथ**
कुंक्रांताः॥ कुंक्रांता नीलपुष्पी जयवस्या वैराजिता॥ विष्णुक्रांता कटुमे
घ्ना वमिवृण कफान्नजतेत्॥ **अथ साध हूली॥** संघपुष्प शंखनाम्नी किरी
टी कंबुमालिनी॥ कंबुपुष्पी स्मृतिहिता मेघा अवनविलासिनी॥ शंखपुष्पी
रसामेघा माता चेतोविकारिणी॥ रासाजनी कषालो ह्ना स्मृतिदामेहनाशि
नी॥ **अथ दूची॥** दुग्धिका मद्युपर्णी स्यात् दूरीरिणी स्वादुपुष्पिका॥ दुग्धिको
ष्मागुरुतूष्णा वातलागर्जकारिणी॥ स्वादुविषंजिनी वष्म कफ कुष्ठक्षमी

६ वि

५६

न जयेत् ॥ **अथ आद्या हली** ॥ अर्कपुष्पीकुरुरकर्मजलका मात्रिरंडिका ॥
 अर्कपुष्पी ह्ममि श्लेष्मा मेहचित्रा विकारजित् ॥ **अथ त्रिलावा** ॥ त्रिलातको न
 लो जल्ली वीरवदो ग्निवक्रकः ॥ अनुष्करस्तथा रुक्मस्तपनो म्नि मुस्वोद्यनः ॥
 त्रिलातक कषायो म्नाः श्रुक् लोमघुरो लघु ॥ वातश्लेष्मोदरा नाहकुशुशो
 ग्रहणी जयान् ॥ हंति गुल्मानि सरश्चित्रवह्नि मां द्य कृमिव्रणान् ॥ **चिर**
कोटिन ॥ चिरपोटी दीर्घपत्रा कुंतलीति कृत्वा मत्तचिरपोटी हि मातृच्छात्रेदनी
 श्वासका शजित् ॥ **अथ द्रोणा पुष्पी** ॥ द्रोणपुष्पी श्वसनका पाटिनी कुंजये
 निक ॥ वृत्रातिदत्रिका द्रोणा केडिन्यो वषसोरकः ॥ द्रोणपुष्पी गुत्रुरुद्रा
 स्याद्दूष्माक्षयपित्तनुत् ॥ त्रेदिनी का मलाशोफकफ कृमिहरा कटु ॥ **अथ**
ब्रह्मी वस्तु माडूकी ॥ ब्रह्मी सरस्वती सोमा सुसत्पा ब्रह्मचारिणी ॥ माडूकप
 णी माडूकी दिष्टदी व्यामहोषधी ॥ कपोतवंका मुनिकला वन्यो सोमवल्लरी ॥

वृहती हि मा सारा स्वा दुल धु मे घ्यार सा यनी ॥ स्व र्य्यी स्मृति प्रदा कु ष्ट पांडु
 मेहा स्रका सजित ॥ विष शो फुवर हरत द न्म ड क पारि नी ॥ सौ चली वृह
 सौ चली ॥ सुवर्चली अर्क कांता सूक्त गंगा सुरैर्वा द्रुवा ॥ सूर्य वर्त रवि प्रीति व
 व्या वृह सुवर्चला ॥ सुवर्चली गुरुः शीता मूत्र ला क फ वा त जित ॥ अं त्यो श्म
 कु ष्ट मेहा स्म हे धुवर हरल धु ॥ **म धे ह्यी** ॥ म स्या द्नी वा ह्नि का म स्या गंध
 म स्या दनी तथा ॥ म स्या द्नी ग्राहिणी सीता कु ष्ट पित्त क फा अ नु त ॥ **म धे उ**
ल पी पति ॥ तो ज पि प्ल ल्यं सुवल्ली पतूरः क वटी तथा ॥ जल पि प्ल लका हृद्या
 चंद्रोष्ण शुक्र लाल धु ॥ संग्राहिणी हि मा नू द्वा रु ग्दा ह व्रण पहा ॥ **म धे ज**
ने ॥ जो जि ह्वा जो जि का जो नी दा दिका ष र पारि नी ॥ जो जि ह्वा वाला शीता ग्रा त
 हिणी क फ पित्त नु त ॥ हृद्या प्र मेहा का शा स्त्र व्रण वर हरल धु ॥ **ना ग द म**
नी ॥ ना गा ह्वा द म नी ना ग गंधा नु जं ग पारि नी ॥ स्या न्नो ग द म नी चूर्ण
 वृज

वेट

सेतान्नायक काल दाम्नी कर्पिलुकर

लूतावैसैविषापह॥**चहडुलली**॥ गुंजाशिमंत्रिकाताभारतिकाकाक
नंतिका॥ न्याचक्रिकाचूडादुर्मीषाकाकपीलिका॥ गुंजाकेश्यावलकरासुचा
पित्तकफापह॥ नेत्राभजहरावृष्णाहंतिकंडूग्रहव्रणन॥ कमीद्वलुपूकुष्ट
नितदस्चेतापिशस्पते॥**चरवेला**॥ वेलंबरोदीर्घपत्रोवीरदुर्वहुपत्रकः॥
वेलंबरोडुलगाहीकफत्रिभिर्निलर्जित॥**अथ वंदनाम**॥ वंदकस्याहु
अनुहाशेषरीकाप्रवदकः॥ वच्चादनीकामतनुकाप्रत्यापदरोहिणी॥ वं
दाकःकफवातसरक्षोव्रणविषापहः॥**पिंडारनाम**॥ पिंडारःकरहाटःस्या
तीक्ष्णकीलकुरंगकः॥ पिंडारोमधुरःशीतोशोथपित्तकफाहृषेपहः॥**अ**
थ क्लीकलीनाम॥ छिक्केकाक्षवकःकुरोतोशोसेवेदनःपटुःछिकिकापित्त
लाकुष्टकृमिवातकफापह॥**रुहेडा**॥ रोहितोदाडिमीपुष्पोरोहितोकूटशा
ल्ललिः॥ ह्मीहारीरोहिणीरक्तारक्तवुःपारिजातकः॥ रोहितोकेसरोगुल्मप
क्वतुप्लीहोदरापहः॥**अथ मोचरसु**॥ मोचकस्यान्मोचरसः॥ शाल्मलीवे

॥१५॥

॥१५॥

शुकः स्मृतः ॥ मोच निर्घी संकपि छा मोचा वीराच वेष्टुकः ॥ मोचकः शीतलो ग्राही गु
 र्वर्षोति सारजित ॥ प्रवाहिका मपिता स्रक् फटा हनि वहर्णः ॥ **मोचे नामा** ॥ अजगं
 घा वत्स गंधा कवरा पूति वर्वरा ॥ अजगं घाल द्यु रुच्या ह द्या च कफ वात नुत ॥ **अ**
थ कट से लुभा ॥ सैरेकः सहचरः सैरेपः किं करोति कः ॥ दासी सहचरो ह्वं डी सर्प के
 म्र दुकंटकः ॥ रक्त पुष्पः कुरवकः पीतो ज्येष्ठः कुरंक्रः ॥ नीला र्त गलकः प्रोक्तो वा ए
 वा ६ उदक जे जो कपि ॥ सैरेप कुषवा ता स्रक् फपां डुको फोपहः ॥ तिक्तो ह्मो मधुरः केश्यो
 सुसिनि ग्धो केश रंजनः ॥ **अथ सरपत दायं** ॥ इव दस्या ता स्वेत पुष्पी कटु जी गिरि
 कारिका ॥ सीता पराजिता स्वेता निष घ्नी मे ह नाशिनी ॥ नील स्यंदा व्यक्त गंधानी
 ता ७ ल पुष्पा जवादिनी ॥ श्वेत स्यंदा दयं शीतं ग्रह ध्वं दधि कंटकत ॥ कुष्ठ अलत्रि
 दोषानां शोफ व्रण विषा पहः ॥ **अथ मधुरा** ॥ क्षुर क्षुर कोच कोलिला दुः क्षारः स्म
 तः ॥ तैल कंटोति क्षरे क्षु बालिका चेक्षु गंचिका ॥ क्षुरकः शीतलो वृष्या गुठं रुवी
 तर्षु सुजीत ॥ **अथ कफा सा** ॥ कर्पी टै दस्यूल ॥ छादनो वदरः पिवः ॥ कर्पी सकल धुः

८

को ह्यो मद्युरो वातनाशनः ॥ तद्दीजं संजने वष्यं स्निग्धं कफकरं गुरु ॥ **अथ राम**
सीतला ॥ अरामसीतला देवगंधा कुर्कुटमर्दनः ॥ अरामसीतला सीता कटुपित्तक
 फासनुत् ॥ **अथ करदा** ॥ कुर्कुरुद्रस्ताम्रचूडे सूक्ष्मपत्रो मधुर्वुदः ॥ कुर्कु
 रुद्रुकटुस्तिक्तो ज्वररक्तकफापहः ॥ **अथ वामि** ॥ वामशंखधरा वारिवोचहि
 मं मेचिको वामो शोफहरा कुष्ठपित्तश्लेष्मापहसरा ॥ **अथ वलामो** ॥ वाला
 मोटा जजा सूक्ष्मपत्रा ज्येष्ठा पराजित् ॥ वलामोटा विषश्लेष्मवृक्षबुद्धिजपप्रदा
अथ शरपुष्पा ॥ शरपुष्पा कालशाकं हृत्ती हरिः कालिका मता ॥ शरपुष्पा यक्षतूपी
 ह दुष्टव्रणवृषापहः ॥ तिक्ता कषाजशका स्नाश्या सज्वरहरालघु ॥ **अथ मजूरसि**
रका ॥ मजूरसि शिखा जेता साहस्री मद्युक्छुद ॥ मजूरसि शिवालघ्वी पीत
 श्लेष्माति सारजित् ॥ **अथ लक्ष्मणा** ॥ लक्ष्मणा पुत्रदारक्तविंदुपुत्रा च नागिनी की
 लक्ष्मणा गर्जदशीता सरा वष्या त्रिदोषजित् ॥ **अथ मोसरोहिणी** ॥ मोसरोहिण्या
 तिरुहा वृता चर्मकंसा कसा ॥ स्यान्मोसरोहिणी वष्या सरा दोषत्रजापही ॥

॥ १६ ॥

वासीव
 हिमलो
 चिको ४

॥ १६ ॥

कां उ वल्ली सुवल्ली च सदा कां उ रु हा रु हा र स्थिर

अथ सिंहारु॥ अथ सिंहारु को वज्र वल्ली को वृंष्टिका॥ वज्रं गी गंथ मान वज्र प्रोक्ता सा
द स्थि रं खला॥ अथ सिंहारु कः शी तो वृष्णो वात हरो स्थि युक्॥ **हररं संहारनाम गुण॥** अथ
आकु॥ अर्क सूर्यो हितः क्षीरी सदा पुष्पो वकीरणः॥ मंदारो वस्ति को नाकी राजा ही दीर्घ पु
ष्पकः॥ अर्क द्ययं सवाकु शृकंडू विष व्रणान्॥ निहंति प्रीह गुल्मा शोथ वृत्तं प्लेष्मोदर व
मीन्॥ **अथ कलियरु॥** करवीरो महश्चेत पुष्पः स्याद्यः तपुष्पकः॥ रक्त पुष्पः सरः प्रुं डे
लगु उः करु वीरकः॥ करवीर द्ययं तत्र शोफ कुष्ठ व्रण ग्रहः॥ लघु हृन् वृक द्रुं मंदि
तं विष वन्मृतं॥ **अथ चूर्तरनाम॥** घर्तूरः कितको घृजे देवता मदनः सठः॥ उन्मतो मा
तुल स्तूरी रतुलः कनका हृजः॥ घर्तूरो मदन वर्णं जिवा त वृत्तं रकुष्ठ नुत॥ उन्मो
गुरु व्रण प्लेष्म कंडू वृमि विषा ग्रहः॥ **अथ कलिहारी॥** कलिहारी वह्नि मुखी लो गली ग
र्ज पातिनी॥ विशल्या हलिनी सीरी प्रमाची शुक्र पुष्पका॥ कलिहारी सराकुष्ठ शो
फा री व्रण मूल जित्॥ तीक्ष्णो ह्मा वृमि तुल्य घ्नी पित्त ला गर्ज पातिनी॥ **अथ कुमारी॥**
कुमारी मंडला वाला गृह क न्याति पिष्टला॥ कुमारी मेदिनी शीता य वृत्तं प्रीह कफ ज्वरात्॥

घंटे

१७

काट

निहंति वह्नि विस्फोट पित्त रक्त त्वरामयान् ॥ अथ जंगनाम गुणः ॥ जंग जंगमातु
ला नीमो हनी विजया जया ॥ जंग कफ कुराति कुराहिणी दीपिनी लघु ॥ तीक्ष्णोष्ण
पित्तला मोहमद्वेद्वा गकोपापुरीजा जीविवर्द्धनी ॥ अथ काच ए ॥ काचो निषोणः
फलनीका कयुक्ता केवल्लरी ॥ काच न सत्य दामूर्ध्व व्याधौ घत्रयापहः ॥ अथ दुर्वा ॥ दु
र्वा शिथिल शीत करी गोलोमी शतपर्णिका ॥ अन्या ज्वेती ज्वेतदं जमार्गवी दर्मना रूहा ॥ दुर्वा
हिमा विसर्प सुतटु पित्त कफ दाहनुत ॥ अथ गंडुर्वा ॥ गंडुर्वा मत्स्य गंधा मत्स्या दोश
कुलादनी ॥ गंडुर्वा हिमालोहद्रा विणी ग्राहिणी लघु ॥ दाह त्रिष्मा वला सास्त कुष्ठ पित्त त्वरा
पह ॥ अथ काष्ठं सु ॥ कासः सुकामः कामे दोषा वीकः ज्वेत चामरः ॥ कासः कृष्ण स्मदाह
पित्त क्षय हरो हिमः ॥ अथ दाम ॥ दर्म वर्हिकुश स्तीक्ष्ण सूचनो यज्ञ भूषणः ॥ दर्मः कृष्ण स्म
त्रटु पित्त वासि रुक् कफ वात जित ॥ अथ नल ॥ नलो दोषी पुष्प मृत्युर्द्रम नो नर्तकः पित्तः
नलो मूर्त्ता सुदाहा स्रज्वा सच कफ रक्त जित ॥ अथ वासु ॥ वंशी वेणुः कीचकः स्यात्कर्मी
रत्न चकारकः ॥ वंशः सरोहिमः पित्त कफ दाहा स्रशो फजित ॥ तल्करी रोगुरु र्मेदी

१७

कुष्ठे पाद्मा मये कृच्छ्रे रक्तपित्तवृण्ज्वरे। दाहे निदाघशरदिनैव पूजितमद्रकः॥६॥

श्लेष्मलो वातपित्तजित्॥ **अथ वा स॥** दाहेति प्रासिद्धं ज्ञात्वा। ज्वानी ज्ञावनी ता

द्वौ त्रुका मयकारिणी॥ ज्वानी ज्ञावनी त्रुका ग्राहिणी मादना गुरुः॥ वल्क

लस्तत्फलौ त्रुतो त्रुदो ग्राही विशेषणः॥ **अथ फीमा॥** ज्ञाफूकं तदप्रसो द्रुतो

माहिफेनमफेनकः॥ ज्ञाफूकं शोषणं ग्राही श्लेष्मद्यु वातपित्तले॥ **छलहंटा न**

म॥ छिलहंटो महामूलपातलगुरुडाहृत्॥ छलहंटा परवृष्ण श्लेष्मलः

पवनापहः॥ यो राज्ञो मुखतिलकः॥ कदारमलस्तेन श्रीमदन न्यपेण निर्भि

तं। जज्ञेथे नृन्मदनविनो नो दनाम्नि पूर्णे ग्रीथेयं ललितपदं किता ज्ञेनयादिः

इति श्रीमदनपातन विरचिते मदनविनोदो निघण्टे ज्ञानयादिपुथ्यमा॥ तद्रविराजिता

मध्यशब्दः श्रीहचिरं परमक्षरमेकं श्रीमदनद्वितीयाय सदाते विष्णुपदं विपदं विनिह

तु॥ **अथ सुठ्ठी॥** सुठ्ठीविश्लेषघं विष्णुकटुनेद्रुं कटौ कटं॥ प्रहोषघं श्लेष्मवेरं नागरं वि

श्लेष्मेषजं। सुठ्ठी त्रुच्यामवातघ्नी पाचनी कटुकालघुस्तिग्धौ क्षामघुरा पके कफवा

हा किंतु पत्पातयेज्जीवा विषधमनुलोमना। शक्तिविबंधनो देस्मिन्पातने स्प न विद्यते = ज्ञाधिक्येन ज

यन्मद्रवतां नयेत्। सशोष्यकु रुते बंधं तदत्र ग्राहि कीर्तिता एतन्न दो एयो गित्वा न्नागे रेग्राहिता म

नाग रेग्राहि
त्रिचिद्रुक्तं
वथा ज्ञेय
गुणभूयिष्ठ
तायां शोपरि
शोष्यचसंग
हातिमलं
ग्राहि सुग्रा
यो मना
नाहकश्चि
वेवधनो
नेप्राता
गरेगा
कथं।
धनोव
पकि
नु
गा।
रमा
यन्मद्रवतां

धं८

१८॥

ला८

१८॥

तावितं चतुर्वर्षा स्वर्ग्यचनिष्ठा सकासशूल हृदा मपानं हन्ति श्रीपदशोकाशी
अनाहोदरमारुतीन् ॥ **आद्यानाम** ॥ आर्द्रकं शृंगवेरं तु कंदौषचमुदाहृतं ॥ आर्द्रकं
नाजरं गुण्यं नेदने दीपनं गुरु ॥ **अथ मरिच** ॥ मरिचं वल्लिने तीक्ष्णं दीपनं कफवा
तनुत ॥ दुष्पित्तकरं रूक्षं श्वासशूल कृमीन् जयेत् ॥ तदा द्रामचुरं पाकेनापुष्पं म
चुरं गुरुः किंचितीक्ष्णं गुणं श्लेष्मप्रकृति स्यादपित्तलं ॥ **अथ पीपलीनाम** ॥ पिप्पली च पला
कृष्णा माउधी मज्जघारिणी ॥ कृष्णा पाकुल्या वैदेही शौंडी स्यातीक्ष्णं तु डलां ॥ पिप्पली दी
पनी वृषा स्वादुपाकारसायिनी ॥ अमृता कटुपास्यग्धा कफवातहरालघुपित्त
लारेचनी हन्ति श्वासकासोदरज्वरान् ॥ आर्द्रकं कफप्रदास्त्रिगुहा शीतकौमाचुरा गुरु ॥ **अथ**
अषणंचतु रूषणं विष्ठापकल्या वैदेही मरिचं अषणं कटुवोषं कटुत्रयं तस्या संग्रहि
चतुरं रूषणं अषणं दीपनं हन्ति स्वासकालजामायान् ॥ गुल्ममेहकप स्यात्समेदश्ली ॥ **१८॥**
पदपीनसान् ॥ **अथ पीपली मूत्र** ॥ कणमूलं कटुगुणं पिप्पली मूलं रूषणं वदुषि जं
धिकामूलं लमाजघाचटकाशिरः ॥ दीपनं पिप्पली मूलं कटुहं पाचनं लघु ॥ रू

द्वेपितकरं त्रेदिकफवातो ररायहं ॥ **अथ च च** ॥ च न्ये च व नु मुदिष्टं च विकाकोल वल्लिका
पिपला मूलवत स्या वि शेषा दु द चापकः ॥ **अथ गजपीपल** ॥ तत्फलं श्रेयसाहस्ति मज्जा
गजपिपला गज मूलक कटु वीत श्लेष्म नु द्राहि वर्धनी उष्ण निहंत्य तीसारं स्वासकं
ठामया कमीन ॥ **अथ चित्रक** ॥ चित्रको हुत मुकुवालो दहनो दाहनो गुणः ॥ अग्नि
पाली हवीः पाठी वह्निनामा विशेषतः चित्रकः कटुकः पाके वह्निवत्पाचने लंघु ॥ नूदो
हो ग्राहिणी कुष्ठ शोफा र्शः कृमिका सन्निह ॥ श्लेष्मानिल हरो ग्राही तक्का कं श्ले
ष्मपित्त नृत् ॥ **पंचकोल मंडूष एनाम** ॥ पिपली मागधी मूलं च वं नागर चित्रकः पंच
कोलकफ नाह रुल्ल शूल रुचिं जयेत् परिचे न युतं तत्र षडूषण मुदा हन्ता ॥ **सौफ**
सौफ डी ॥ शत पुष्पा कफोपाशता हाकार र्शी मती अवा कूपुष्पा वचिष्टुजा सेने
का मागद्या पाराशत पुष्पा लघु स्तुति द्वा सापि हृदि पिना कटु उष्ण ज्वरानिल श्ले
ष्म वृण शूल क्षिरो गृत् ॥ सेनिका तदु ए प्रोक्ता विशेषा यो नि शूल जित् ॥ **अथ**
मेथी ॥ मिश्रया मिश्र शांला सा शाली सा त शिवा मता ॥ मिश्रया वी पनी रुद्या वद्य

निघंटु विटुकमिष्टूलजितचूदोऽंततफलं काशवमिष्टेष्वा निलं जयेत् ॥ अथ वनमेथी ॥
 मेथीका वस्तुकारखेलुरपिथो वनमेथीका ॥ अहिथोल्या गुणस्तत्रवाजिनो सतपूजितः
 अथ अजमोदनाम ॥ अजमोदालुगुगंघ्रामोदाद्यस्ति न पुरकः ॥ खराहाकारवीचला
 वस्तुमोदाचककटः ॥ अजमोदाकटुस्तीक्ष्णो दीपनो कफवातनुत ॥ उष्णविदाहिनी ह
 द्या वृष्णा चक्षुमलालघुनेत्रा मया कफघ्ना हि हृद्यो वस्ति नुपो ययेत् ॥ अथ जीरेकेत्र
 यं ॥ जीरेकेदीर्घकं शुक्रमजा जीषण जीरेकं जीरेकं जारणं कृष्णवस्तुकोली सुगंधकं ॥
 कालिका पुष्पकुंचीका कारवी जेयकुंचीका ॥ पृथ्वीका पुष्पवीर्यव्यासूलजं जपु
 पकालिका जीरेकं त्रितयं चूदं कटुं पाचने लघुं सेंगो हि पित्तलं मेघा गजाशय
 विशय्यकृत ॥ चक्षुष्यवकलै जीनाद्या न गुल्मघ्ना चलां सनुत ॥ अथ जवाय एन
 म ॥ जवान्नीदीपिको दीप्या दीपिनी या जवानिका ॥ जवासाहा गुगंघ्रा स्या जवाहा नूकव
 दकं जवान्नीपाचिनी हृद्या तीक्ष्णोष्ण कटु कालघुवातप्रेमोदरा नाह गुल्मशूलक
 मो नूजयेत् ॥ अथ खोहरी जवाय एनी ॥ जवान्नीपाषणी स्या यो आहारो जंतुनाशिनी ॥

१६॥

१६॥

चै हारस्तदुः प्रती विशेषात्मिनाशनः ॥ **अथ वर** ॥ अत्र गंधा पूर्वकी टी-
 व वरापूतिवर्वरी। कारवीषरपुष्पाचतुंजीपूतमयूरका। अत्र गंधा कटु स्ती दशा तूदी
 हृद्यग्निमाद्यक्तदृष्टिमाद्यप्रदालद्या अरुवातकफापहा ॥ **अथ वच** ॥ वचो
 गंधा एलोमीषदं च त्रटिला तथा त्रटिला सतपर्वी न्यालोमशा हेमवत्यपि। व-
 चोष्ठा कटुकातिक्ता वा मिनी खरवर्णै कतू ॥ अपस्मारकफोन्मादनेर्मूलानिला
 न्जयेत् ॥ **अथ होहवेर** ॥ हपुषा वपुषा विष्वा विष्वा विष्वा गंधिका। अन्या स्व-
 र्णफलाद्यंतनाशिनामस्य गंधका। हपुषा दीपिनीतिक्ता कटु हस्तुवरगुरुः
 पित्तोदारकमीनशीग्रहणी मूल गुल्मनुत् ॥ **अथ वायविडंगनाम** ॥ विडंगं त्रुह-
 नं कृष्णस्वसुद्रतंदुला ॥ द्योषाकरालं मृगनामिनी विडंगं कटुकं पाके लघुतिक्ता
 तिपित्तलं। कोष्ठा वह्निकरं तीक्ष्णं कृष्णं कृष्णं विवेचनत् ॥ **अथ द्यालीया** ॥ द्या-
 न्य कंदान्यकंदानं द्याने पंचवितुन्नेक। कुस्तुवरस्तदाद्यनुषीनेषाने द्याने पका-
 लिका ॥ द्यान्यकं सुवरं स्निग्धं मवप्या मूयलं लघु ॥ हृद्यं उच्यं वद्विद्वं स्वा-

दुपाकेत्रिदोषजित् ॥ पाचनं स्वादकं सास्र कोष्ठा मपि कृमी न जयेत् ॥ आलकातदु
 ण प्रोक्ता विशेषात्पीतनासिनी ॥ **अथ हि गुपत्री** ॥ हिं गुपत्री पृथक् कूलनी पृथक् का
 वारूपत्रका ॥ हिं गुपत्र्यवरावेण प्रत्री हिं गुसवाटिका जंतुषारा मूठी नाडी पि
 डी हिं गुफला मता ॥ हिं गुपत्र द्वयं हृद्यां तीक्ष्णं पाचनकटु ॥ हृदस्ति रुक्
 द्विवंधा शस्त्रेष्वा गुल्मानिलापह ॥ **अथ ही गुनाम** ॥ हिं गुवाही कर्मसु ग्राम ठं
 नूतनी शनं ॥ अगूटं गंधजननं जंतुषधूमसूपनं हिं गुलं पाचनं रुच्यं तीक्ष्णं क
 फवातनुत् ॥ शूल गुल्मादरानाहक मिजिष्ठित वर्धनं ॥ **अथ वंशलोचना** ॥ वंश जा वैष्णवी
 श्रीरा त्वक्षारा वंशलोचना ॥ त्वगाक्षीरी त्वगा वंशी वंशक्षीरी शुभासिता वंश जा वैदहणी व
 ष्याशीतनामधुरा जयेत् ॥ त्रिष्माक्षयज्वर स्वास कासपित्त सुकामला ॥ **अथ सीधानाम** ॥ ॥२०॥
 सैधवं शुधजं शुध्वं माणिमं यं कटु तमं सैधवं मधुरं द्रुद्यदीपनं पतलं लघु ॥ चक्षुष्यं
 पाचनं स्निग्धं वृष्यं दोषत्रयापहं ॥ **अथ सौ चल** ॥ सौ वर्चलं सुगंधाक्षं रुचिकं हृदं गं द्य
 धर्बकं ॥ सौ वर्चलं वह्नि कारकटु स्मं विशदं लघु ॥ तुङ्गार शुधिवं सूक्ष्म विवंधानाह शूल जित् ॥

अथ विडलो ए॥ विडहृत्पार्श्वकंपाचंघूर्तद्विविडमासिकः॥ विडंलघुह्माविषं
त्रंशूलहृद्वाकशं॥ हंत्वा नाहकफौदममद्यावातानुलोमनं॥ अथ सामुद्र
लो ए॥ सामुद्रंवारजंरूतकीरं प्रसीरं तथा॥ सामुद्रं दीपनं स्वादु नोत्पुल्लं जेद
नं कटु॥ श्लेष्मलं वातानुत्पुल्लं अद्रित्युल्लं वातपित्तपित्तलं॥ अथ सा जेदो॥ उडि
मिजंरूमपाथिवपथिवीरूवउडिदरक्तलं सूक्ष्मं लघुवातातुरोद्यनं॥ अथ सा
जरलो ए॥ गडाक्षेरोमलवणशोभं साकं जरी जेवं॥ गडाखं लघुवातघूमपुल्लं
जेदमूत्रलं॥ धरीलो ए॥ क्षारमो सुज्वंतस्यतौषकषसंजयं रपाशवं जसं क्षा
रगुरुकटस्तिग्धश्लेष्मलं वातनीशनं॥ अथ काचलवण॥ काचत्रिकटं पाक्या हु
लवणकाचसंजवे॥ काचदीपनमपुल्लं रक्तपित्तविवर्धनं॥ अथ जवाषारसल॥
जवाक्षारः सूक्ष्मणकोयवस्तुको जवाग्रजः॥ स्वार्जिका स्वार्जिकः स्वर्पस्वर्चः सुवी
र्चिका॥ जवक्षारजित्कटुं तश्लेष्मस्वा सगला मयान्॥ ग्रा मारी ग्रहिणी गुल्मय
कस्ती हरुजो जयेत्॥ स्वार्जिबौ कात्य गुण तस्यादि शेषा दुल्मपूलनुत्॥ अथ सुहागानम

५८०

रत्नचूना

२१॥

टंकणो मालती ज्ञाता द्रावी लो हवि शुद्धिदः ॥ टंकणो न्नि करो नू द्यो क फ द्यो वा त पि
 न क त ॥ **अथ मुद्या द्यार नाम गुणः** ॥ मुद्या द्यार मत्ता सौ द्या नू ष एं क दु र् ई क र ॥ सु
 द्या द्यारो जि सं का श पा का ली व व दारुणः ॥ **अथ सर्व द्यारः** ॥ पला श तिल नाल
 स्प द उ कः क द ली न वः ॥ अ पा मा जी र्क से हुं ड मो द का दिस मु द्र वः ॥ द्यारः व द्दि
 स माः सर्वे प व नी जे द दारुणः ॥ ल घ वः ल्के द न स्ती द्यारः ॥ शु क्रै जो दृ द्दि ना श नः ॥ र
 क्ति पित्त कर धुं ति वि वि द्या ना ह पी न सान् ॥ य क्ता ह व सा लो म गु ल्मौ शे जि ह ली क
 मी न ॥ यो रा द्रे मुख तिल क के दार म ल्ल से न श्री म द न न पे ए नि र्मि ते ग ग्र थे नू न्म
 द न वि नो द ना म्नि पू र्ण सु कं ठा दि ख लु मि ष जं हि त प्र व र्गः ॥ **इति श्री म द न पाल**
विरचिते म द न वि नो द नि धं टौ शु ठि पा दि व र्गो द्वि ती यो द्या यः ॥ २ ॥ अ रो ज्प पा रा यो
 न व व ल्म मि वै वा लं वि नो दा त्प री चुं वि र्त स्य ॥ चो र्थं पि व तं प ति व ल्ति तं सा अ र्य यु क्तं ह रि
 ना अ या मि ॥ **अथ क पू र ना म गु णः** ॥ क र्पू रः स्फु टि क अं द्रः शि ता मी हि श्वा ल ह्म कः ॥ दि मा
 प ला शी त जो मु ती क स्तु शि ता ह्म क यः ॥ क र्पू रः शी त लो व षो च द्दु ष्या ले ष नो ल घ ॥ क र्प
 दा हा श प वै र स्प मे द शो फ वि षा प ह ॥ **अथ क स्तु री द्व यं** ॥ क स्तु रि का मृ ग मे दो व ध मु ष्या मृ गं उ जा ॥

सुहागायी सं श्री
 वै धा तरे का म ह
 मा इ स त्त =

२१॥

नाभेरथाव्यासालुताकस्तुरिकामदा॥ कस्तुरीशुक्रत्वागुर्वीकटुकाकफशीतजित
ह्योष्माहतिविषशर्दिशोशदौर्गधमारुतान्ततारकस्तुरिकातद्वनेष्वाशीताल
धुसथा॥ **कस्तुरीद्विपत्तामगुण**॥ मार्करीपूतिका रितिकचः स्याद्देधवेलिकाः॥ माज्जारीवा
तिशयतेचक्षुष्याकफवातजित॥ **जवादिनामगुण**॥ चंदनेतिलवर्गस्यान्महर्हस्वे
तचंदने॥ जेद्रेशियंऊलयंजंगोशीर्षं गंधसाधकं॥ चंदनेशीतलंरुदंतिक्तमाल्यु
नंदलघु॥ हृद्यंवल्लविषश्लेष्मत्क्षापितस्वदाहजित॥ **चंदननामगुण**॥ रक्त
चंदनेमुदिच्छलेहितेक्षुद्रं चंदनं॥ ताम्रसारंरक्तसारंज्योतिः॥ सोमंचरंजनं॥ रक्तशी
तंगुरुः स्वादुः शर्दितश्चास्त्रपित्तजित॥ तैक्लेत्रहितंनव्यंज्वरव्रणविषापहं॥
यथैरक्तचंदननामगुण॥ कालीयकंपीतंसारंपीतंनारायणप्रियं॥ कालीयंकरक्तगुण
विशेषाद्यंघाईकीलनाशनं॥ **मल्लिङ्गीनामगुण**॥ रुक्मागुरुः स्वादुगुरुः राजाह्वि
ष्वरूपकं॥ जागलंशितमलिनंरुमिजगधमनार्यकं॥ रुक्मागुरुश्चकस्मिन्नि
रोगनुत्पित्तलघु॥ **रुक्मागुरुनामगुण**॥ कुंकासिचारुचालीकंबर्णमणि

कुंमं

दा

शिशुपरं। कास्मीरं पित्रमश्राधं संकोचपि श्रुतं तं कं। कुंकुमं कटुं केंद्रिधमाश्रि
घंट० रोरुग्वृणं जंतुजितल उग्रदामस्य करं कर्णवंगदोषत्रयापहं॥ **कुंकुमनामगुण**
॥ सिल्लुजो कथितो धमः तुरुषु पिंडतः कपिः॥ सिल्लुतः कफकंदूकः सिल्लुग्वोश्रः
श्रुतं कांतिकत॥ **सिल्लारसनामगुणः**॥ एतं कं बालकं मेला लुबालं कं ह
खिलुकं॥ एतं लुशीतं हं तिकं इकुषुकफकमान॥ त्रुष्टुष्टि विषचिन्तास्त्र
हन्मूत्रगउजिन्नवः॥ **एतं बालुकनामगुणः**॥ जातीफलं जाति सूतं सातु कं मातुतीसू
तं जातीफलं लघुस्वयं हृद्यं दीपनपाचनं॥ उग्रं कफानिल्लुष्टि कं मपीनसकासजित॥
जायफलनामगुणः॥ जातिपत्री जाति केशा मालिती पीत्रिका तथा॥ जातिपत्री लघुस्मास्या क
फकमि विषाहा॥ **जाद्रूपत्रीनामगुणः**॥ लवंगं शिखरं दिव्यं लवचंदनपुष्पं कं॥ श्रीपत्रं देवपुष्पं च
त्रकुसुमं मृगारि वारि संभवं॥ लवंगं लघुचुक्षुषं हृद्यं दीपनपाचनं॥ शूलानाहकफ

८

२२

२२

श्वासत्रस्यार्द्धिष्यापहं॥**लवंगनामगुणः॥**कंकोलंकडुकंकोलंमारिचंमाद्युवोषितं
कंलेकौमुहंद्रोगकफवाताग्निमाध्यजित॥**कंकोलनामगुणः॥**एलात्रुटिश्चंद्र
वलावहुनिद्युटिर्धवा॥कपोतवर्णशुद्धमोलाकोरंडीद्रावीडीमयी॥**एलासूक्ष्मा**कफश्वा
सकासारंशैमूचकश्चनुत॥**सूक्ष्मएलानामगुणः॥**स्यूलैलात्रिपुटाकंन्याभद्रैत
त्विदिबोदुवा॥**स्यू**स्यूलैलारेचनीतीक्ष्णलघुष्माकफपित्तजित॥**हुल्ला**सविषवस्त्य
क्षिशिरारूज्वमिकासजित॥**स्यूलैलानामगुणः॥**त्वतैवरागसकलेलकोलंतंतनुके
वरं॥**माषप**एर्पघनेभृंगगुडत्वक्स्वर्णभूमिके॥**त्वचंलघुष्मंकडुकं**विषादस्वादुपित्तल
हृदसिरोगवातार्शःपीनसःक्रमिशुकद्रुत॥**ताजनामगुणः॥**नागकेसरकंन्यागंचो
पेयंकेसरंगजं॥**नागकेसकं**रूक्षमुष्मलच्छामपाचनं॥**दौर्गंध्यकुशवीसर्पकफ**
पित्तविषापहं॥**नागकेसरनामगुणः॥**तालीसपत्रंतालीसंधात्रीपत्रंसूकोदरं॥**ज**
पथिकापत्रंपत्राद्यंतलसीदलः॥**तालीसंतलघुतीक्ष्णं**स्वासकासकफानि
निहंतित्यरूचिगुल्मार्शवीहृमाघक्षयाप्रयान्॥**तालीसनामगुणः॥**श्रीवास
कोदासीश्रीनिवासःसुवासिकः॥**श्रीवासः**कफमूर्द्धाक्षिरोगवातहरःसरः॥

३॥

सनामगुण॥ वालकं वारिही वैरपिं गमाचमनं कचं॥ उदीचं वज्रमंथां
वारिचं गंचमूलकं॥ वालकं शीवलं रुदं लघु दीपनं पाचनं॥ रक्तपित्त
श्लेष्मादाह रक्षा व्रण रहं॥ नेत्रवाला नामगुण॥ मांसी जटा जतके सीक
दानल दंशिखा॥ कृष्णान्नपूतनाके शीगंच मांसीपि साचिका॥ मांसीहिम
दोषास्तदाहवी सर्पकुचुत्रित॥ ४५ नामगुण॥ उशीरमत्रयं सेव्यं वीरं वेरण
मूलकं॥ उशीरपाचनं शीतं संजनं कफपित्तत्रित॥ रक्षा स्रविषवी सर्पदाह
कृच्छ्रव्रणपहं॥ उशीरनामगुण॥ रेणुकापित्तला कौंती पांडुपत्री हरेणुका
रेणुकापित्तला प्रेक्षा वह्निक्क दुर्जपातिनी॥ रेणुका नामगुण॥ प्रियंगुफ
लिनी स्यामा कान्ता दानदिनी लता॥ प्रियंगुशीतला वातदाहपित्तज्वरास्तत्रि
त॥ प्रियंगुफूलनामगुण॥ शैलेयं स्यावरं वृद्धं शिला पुष्पशिलो द्रुवं॥ शै
लेयं शीतलं हृद्यं कफपित्तहरं लेघु॥ ४६ लीरनामगुण॥ लोमज्जिकं
लेजोद्या रं दीर्घमूलं जलाश्रयं॥ ४७ कौपथकं शीघ्रममृणालं सुनीलकं॥
लामज्जिकं हिमं कृदाह दोषत्रयास्तत्रित॥ ४८ मतनामगुण॥ गुग्गुलः शाल

॥

॥३॥

निर्यासोमहिषाक्षः पल्लवः ॥ तटापुः कोसिको दुर्गादेवदूषः शिवः पुरः ॥ गुग्गु
 लुर्वी शदस्ति कोवीर्यो मधूरः सरः ॥ नग्नसंघानकदृषः सूक्ष्मः स्वर्णरसा
 यने ॥ दीपनः पिष्टलोबल्यः कफवातव्रणपहः ॥ मेदोमेहास्रवातास्रलेदकु
 श्माप्रमारुतान् ॥ पिडिकाग्रंथिशोफाशो गलगंडकमीनजपेत् ॥ सनको बं ह
 णवृषः पुराणस्मृतिकाकरणः ॥ **गुग्गुलनामगुणः** ॥ रालासर्जं रसोयकद्वेषः
 सूर्यो निवर्त्तनः ॥ क्षणकः सालनिर्यासो लाक्षाहिललोमो वरः ॥ रालाहिमागुरु
 सिक्ता कषाया ग्रहणी त्रयेत् ॥ ग्राहस्रस्वेदवासर्पज्वरव्रणविदिवा ५ त्रा ५ पादिका ॥
रालनामगुणः ॥ स्थाण्यं वह्निचूर्णं वसुकवर्णं शुक्लदं ॥ स्थण्यं शीतलं वृषं
 मेघं दोषत्रयापहं ॥ **मेघफलनामगुणः** ॥ चोरकः कितवश्चंडो दुःपत्रशंकितो रिपुः
 चोरः स्वादुर्लघुः शीतः कुष्ठवातकफास्रजित् ॥ **चोरकनामगुणः** ॥ मुरागं च
 दैत्यं गंधाट्टपासुरनिकुटि ॥ मुराशीतालघुः कुष्ठग्रहपित्तानिलास्रजित्

महिषारव्योमहानीलः कुमुदः पद्मएवचाहिरण्यः पंचमश्रेवजातितोगुगुलुर्मतः तेषु चादौ मनु
 दीयते शिवः । कदाचिन्माहिषानीलस्ततस्तौ च नृणां मपि । हृषानो कुमुदः पद्मः स्वस्मारो ज्यकं रे
 द्रनीलो च वारणं देहि तावुभौ ।

कपूरकाचरी

मुरानामगुण ॥ कर्चूरोद्राविजोगधमूलकोदुर्लभः सही ॥ कर्चूरोदीपनोरुच्यः कुशार्शिवृणकास
त ॥ छिन्नोत्तर्जयेत्स्वासगुल्मवातकफक्षमीन ॥ **कर्चूरनामगुण** ॥ सटीपत्तासीमङ्गुयासुवृता
मूलिनी ॥ सटीशीताज्वरश्लेष्मकासजिह्वहणीलघुः ॥ **सटीनामगुण** ॥ स्फुक्कासकृवाहण
निर्माल्याकुटिलावध ॥ स्फुक्कासादुहिमोवृष्याकुशालक्ष्मीत्रियोनुत ॥ **स्फुक्कानामगुण**
कानर्तकीसून्यानिर्मध्याधमनीनटी ॥ नलापितोस्रजिष्णीतावृष्याकुशकक्षुजित ॥ **नलिका**
गुण ॥ पद्मकेनलपञ्चरूपीतरक्तसुप्रभः ॥ पद्मकेदाहविस्फोटकुशश्लेष्मास्रपित्तजित ॥
गर्भसंस्थापनशीतत्रस्मावीसर्पदाहजित ॥ **पद्माकनामगुण** ॥ पुषोउरीकेवौद्राद्वेशतपुष्प
सपुष्पके ॥ पौद्राद्वेशुकलेशीतचक्रुष्यश्लेष्मपित्तजित ॥ **पुउरीकनामगुण** ॥ तजगिर्वहिणजि
मचक्राद्वेनघुषेनयेते ॥ अपरपिण्डीतजरदीपनेकदुमहोरके ॥ तजरमधुरंस्निग्धतिक्तोत्तल
घुमुतजित ॥ विषापस्मारमूर्च्छाक्षिरोगदोषत्रयपाहः ॥ **तजरनामगुण** ॥ जोरोचनास्त्रिचि
र्गोरीरोचनापिण्डीगलामता ॥ मागल्यागोतमीमेध्यावध्यागोपित्तसंभवा ॥ रोचनाशीतलावण्यपा ॥ **२४**
गर्भस्रावग्रहस्रजित ॥ **जोरोचननामगुण** ॥ नषाद्वोनषेधरः शिल्यीहनुनागहनुरव
रः ॥ सुक्तिसंखोव्याघ्रनखमन्यध्याघृतलेपदं ॥ नखाद्वयंग्रहश्लेष्मवातास्रज्वर
कुशनुत ॥ लघूष्मशुकलंवर्यस्वासकासविषापहं ॥ **नखद्वयनामगुण** ॥ पतंगं पृष्ठं
सुगं स्याद्रक्तकाशकुचंदन ॥ सुरंगं जगत्याद्वपत्तूरं पटुं रंजने ॥ पतंगं मधुरं

८९

४४

स्था

२४

२४

स्निग्धपित्तश्लेष्मवर्णवर्हः॥**पतंजनामगुणः॥**लाक्षाभिर्मत्स्योरक्तद्रुमवाधि
पलक~~का~~वा॥**कमिजाजतुदाणध्वंहा** जावकालककोमतः॥**लाक्षावर्णाहिमावल्या**
स्निग्धाश्लेष्मपित्तजित्॥**वर्णोरक्ततवीसर्पकमिकुशुहापहा**॥**अलक्तकोगुणैस्तद्व**
द्विरशैवाद्युगानाशानः॥**लाक्षानामगुणः॥**पर्वटीरंजनीकक्षाजंतुकाजननाजनी॥**पर्वटी**
वर्णदाशीताकफपित्तसुकुशुजित्॥**पापरिनामगुणः॥**पद्मिनीशतलागुर्वपित्तश्लेष्माविषास
जित्॥**रुद्धाविष्टमिनीस्वादुस्तद्वत्कुमुदिनीमता॥****पद्मिनीनामगुणः॥**पद्मचारिएयतिवराप
द्माद्वावरलीमता॥**पद्माहिमालघुश्लेष्मरुक्जित्तनद्याछापकृत्॥****पद्मिनीकेरविणीना**
मगुणः॥कमलंश्वैमभोजसारसंसरसीरुहं॥**सहअपत्रं श्रीगेहेशत्रप**॥**त्रंकशैशदं॥**पंकैरुहं
ताम्रसंराजीवपुष्कररुहं॥**अश्वत्थममो**रुहपद्मपुंडरीकचपंकजं॥**नलसरोजंनलिनम**
विरविंदमहोत्पलं॥**श्वेतकमलनामगुणः॥**रक्तोत्पलंकोकनंदहल्केरक्तसाधिकं॥**र**
क्तोत्पलनाम॥नीलोत्पलंकुवलयमङ्कडमिंदीवरमतं॥**एतदेवसितंकिंचित्कुमुदकैरवंतुवै**
॥नीलोत्पलनामगुणः॥**कमलंशीतल्लवणंमधुरकफपित्तजित्॥**त्रस्मादाहस्रविस्फोटवि
सर्पनाशनं॥**तस्मादल्यगुणंकिंचिदन्यद्रक्तोत्पलाविकं****कमलादिनामगुणः॥**कल्हारं
घ्रायंसौम्यसौगंधिकमतं॥**कल्हारंग्राहिविष्टमिरुद्धागुरुसुशीतलं॥****कल्हारनामगुणः॥**

किंजल्कः केसं सरं गौरमया तं काचना द्वयं ॥ किंजल्कः शीतलो ग्राही रक्ता र्शः कफपित्तजित् ॥
 वनामगुण ॥ पद्मविजं रूचात्नाटपं पद्मा द्वं पद्मकर्कटी ॥ पद्मविजं हिमं स्वादु गर्भं संस्थापनं
 कफवातहरं वल्यं ग्राहिपित्तस्रदाहजित् ॥ पद्मावीजनमगुण ॥ मणालं विशमं भोजनालं
 लिनीरूहं ॥ पद्मादिमूलं सालूकं सालिनं करहाटकं ॥ मणालं शीतलं लेवर्षं पित्तदाहं
 दुरु ॥ संग्राहिमधूरं रूक्षं सालूकं मपित्तदु ॥ विशनामगुण ॥ जातीपिपे वदाराजीमालती सुम
 मता पीतजात्यपरीपीतपुष्पी कोचपुष्पिका जातीलघूष्मा मूर्द्धादिदतार्तिवृण रक्तजित् ॥ स्वर्ण
 तिकनामगुण ॥ मल्लिकोमोदिनी मुक्तावंधनामदयति को ॥ मल्लिकोष्मालघुवर्ष्या वातपित्तोष्णरोग
 जित् ॥ मल्लिकानामगुण ॥ पर्यिका हरिणीवाला पुष्पगंधमस्रवांडनी ॥ स्वर्णपिथी परापीता गणिका
 स्वर्णपुष्पिका मल्लिकोनामगुण ॥ पर्यीहिमास्रमूर्द्धादि रोगजितं त्वकफवातजित् ॥ फाहिनामगु
 ण ॥ कुत्रुको मद्रतरणि व हत्युष्यामहासहा ॥ शतपत्रातरण पुक्ताकोर्णिका चारुके सरा ॥ रक्ता परार
 कपुष्पात्नाट्या पुष्पातिमं जुला ॥ शतपत्राहिमाद्रुद्या ग्राहीणी शुक्ला मधूः दोषत्रयामाजिद्व
 र्णा कुत्रुकापिचतदुर्णाः ॥ कुजानामगुण ॥ जवूका ककचधदा सुवर्णकेतकी वला ॥ केतु
 की कटुका स्वादुं दीलघुस्तिक्ता कफापह ॥ स्वर्णकेतुकीनामगुण ॥ नेपाली ग्रीष्मकालुता
 स्तायनी वनमालिका ॥ वार्षिकी त्रिपुरा त्वन्या श्रीमती वैषदुपदपिपा ॥ नेपाली शीतलो तित्ता